IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दीन दयाल उपाध्याय की राजनीति राष्ट्र के लिए समर्पित

शोधार्थी,
सन्नी शुक्ला,
दीन दयाल उपाध्याय पीठ,
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय

दीन दयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संध के प्रचारक के नाते जीवन भर रहे। राजनीति में भी संघ के द्वारा भेजे गए। राजनीति क्यों होनी चाहिए और राजनीति में हम क्या आदर्श स्थापित करना चाहते है, यह दीन दयाल उपाध्याय ने अपने राजनीतिक जीवन में बतलाया। भारतीय जन संघ की स्थापना राष्ट्रीय स्वयं सेवकसंघ और प्रथम अध्यक्ष डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा की गई। श्यामा प्रसाद मुखर्जी के अकस्मात निधन के पश्चात भारतीय जन संघ की वागड़ोर पूरी तरह से दीन दयाल उपाध्याय के कंधो के ऊपर आ गई। दीन दयाल उपाध्याय ने राजनीतिक दलों तथा कार्यकर्ताओं के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया। उन्होंने राष्ट्रीय अखंडता तथा एकता को प्रमुखता से अपने राजनीतिक दल तथा स्वयं के आचरण में स्थान दिया। राष्ट्र हित को सर्वोपरि मानते हुए कभी भी अपने राजनीतिक दल को राष्ट्र हित से ऊपर नहीं देखा। दीन दयाल उपाध्याय की राजनीति बहुत स्पष्ट थी, वो कभी भी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करते थे। उनके द्वारा कभी भी राजनीति को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। उनका मानना था कि वोट बैंक के लिए कभी भी राष्ट्र को जाति, धर्म, पंथ आदि में नहीं बांटना चाहिए। दीन दयाल उपाध्याय अपनी राजनीति राष्ट्र को समर्पित करते हैं तथा आने वाले राजनीतिक दलों तथा कार्यकर्ताओं को एक आदर्श स्थापित करते हैं कि राष्ट्र का हित सर्वोपरि होता है।

मुख्य शब्दः राष्ट्र, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, राजनीति

भूमि, जन तथा संस्कृति के संघात से राष्ट्र बनता है। "संस्कृति राष्ट्र का शरीर, चिति उसकी आत्मा तथा विराट उसका प्राण है।" यह उपाध्याय द्वारा दी गई राष्ट्र की भारतीयकृत परिभाषा है। भारत एक राष्ट्र है और वर्तमान समय में एक शक्तिशाली भारत बन कर भी उभर कर सामने आ रहा है। राष्ट्र में रहने वाले जनों का सबसे पहला दायित्व होता है कि वो राष्ट्र के प्रति ईमानदार तथा वफादार रहे। प्रत्येक नागरिक के लिए राष्ट्र सर्वोपरि होता है, जब भी कभी अपने निजि हित राष्ट्र हित से टकरांए तो राष्ट्रहित को ही प्राथमिकता दी जानी चाहिए, यह हर एक राष्ट्रभक्त की निशानी होती है। भारत सदियों तक गुलाम रहा और उस गुलाम भारत को आजाद करवाने के लिए असंख्य वीरों ने अपने निजि स्वार्थों को दरकिनार करते हुए राष्ट्रहित में अपने जीवन की आहुति स्वतंत्रता रूपी यज्ञ में डालकर राष्ट्रभक्ति का परिचय दिया। भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे पुरातन संस्कृति है और उसी संस्कृति से सीखकर भारत को आगे बड़ने की अवश्यकता है। हमें रामराज्य तथा महाभारत में श्री कृष्ण की अधर्म के प्रति धर्म की नीति को न भुलाकर उससे सीखकर एक शक्तिशाली राष्ट्र की स्थापना कैसे करनी है, इसका चिंतन करना अति अवश्यक है। छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप, सम्राट चंद्रगुप्त जैसे शक्तिशाली शाशकों के जीवन से प्रेरणा लेकर भारत को दुनिया के अग्रणी राष्ट्रों की श्रेणी में कैसे ले कर आना है, इस पर भी चिंतन करने की जरूरत है। हमें अपने गौरवमयी इतिहास को न भुलाकर आने वाले शक्तिशाली भारत का निर्माण करना है। दीन दयाल उपाध्याय स्वतंत्र भारत में अपनी भारतीय संस्कृति से सीख लेकर आगे बढ़ने की दिशा दिखाने वाले विचारक थे। दीन दयाल उपाध्याय 'सनातनधर्मी' हैं। वे प्राचीन

से कटकर आधुनिक बनने की प्रवृति को समाज–जीवन के लिए अहितकर मानते हैं। अतः भारतीय राष्ट्रजीवन के पुनर्निमाण की वेला में पाश्चात्य संपर्क व प्रभाव के कारण कटी हुई नई पीढ़ी को अपनी प्राचीन अवधारणाओं से ससंबद्ध करना चाहते हैं।

राष्ट्र की परिभाषा विभिन्न विचारकों ने कुछ इस तरह दी हैः **डी स्मिथ** ने राष्ट्र क्या है, कुछ इस तरह परिभाषित किया है– मानव समुदाय, जिनकी अपनी मातृभूमि हो, जिनकी समान गाथाएं और इतिहास एक जैसा हो, समान संस्कृति हो, अर्थव्यवस्था एक हो और सभी सदस्यों के अधिकार व कर्तव्य समान हो।

रूपर्ट इमसर्न के अनुसार एक संबद्ध समुदाय, जिनकी विरासत समान हो और जो एक जैसा भविष्य पसंद करते हों।

फ्रांसीसी लेखक अर्नेस्ट के अनुसार (1882) आधुनिक राष्ट्र केंद्राभिमुख घटकों की ऐतिहासिक परिणति है। एक जैसा अतीत गौरव, वर्तमान की एक समान इच्छा तथा एक साथ महान कार्य के निष्पादन व इसे बेहतर करने की इच्छा, ये सभी घटक 'जन' बनने की अवश्यक शर्तें हैं और एसे 'जन' की आत्मा 'राष्ट्र' है।

श्री गुरूजी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक ने राष्ट्र–जन के विभिन्न घटकों का उल्लेख किया है– समान इतिहास, समान परंपरा, शत्रु मित्रता का भाव समान, भविष्य की आकांक्षा समान ऐसी भूमि का पुत्र संबंध समाज राष्ट्र कहलाता है।[1]

दीन दयाल उपाध्याय ने भी राष्ट्र क्या है, इस संबंध में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं– विश्व में आज समष्टि की सबसे बड़ी इकाई 'राष्ट्र' है। अतः राष्ट्र की दृष्टि से अगर विचार करें तो राष्ट्र के लिए चार बातों की अवश्यकता होती है– प्रथम अवश्यकता है देश। देश, भूमि और जन दोनों को मिलाकर बनता है। केवल भूमि ही देश नहीं। किसी भूमि पर एक जन (समाज) रहता हो और वह उस भूमि को मां के रूप में पूज्य समझें, तभी वह देश कहलाता है। दूसरी अवश्यकता है सबकी इच्छाशक्ति, यानि सामूहिक जीवन का संकल्प। तीसरी एक व्यवस्था जिसे नियम या संविधान कह सकते हैं, इसके लिए हमारे यहां सबसे अच्छा शब्द प्रयुक्त होता है 'धर्म' । चौथी अवश्यकता जीवन आदर्श अर्थात संस्कृति। इन चारों का समुच्चय यानि राष्ट्र।[2]

दीन दयाल उपाध्याय आधुनिक भारत के भारतीय विचारक थे, उन्होंने सवतंत्रता के पश्चात देश में बनी परिस्थितयों का आंकलन कर देश के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत किए। देश कौन से विचार को लेकर आगे की दिशा और दशा निश्चित करे, इसी के तहत उन्होंने विशुद्ध भारतीय परंपरा और संस्कृति से निकला विचार **एकात्म मानव दर्शन** देश के सामने प्रस्तुत किया। दीन दयाल उपाध्याय के राजनीतिक और समाजिक विचारों को अलग करना काफी कठिन कार्य है, क्योंकि दीन दयाल उपाध्याय राजनीति व राज्य व्यवस्था को समाज की प्रतिनिधि व्यवस्था नहीं मानते। अतः उनके राजनीतिक विचार भी सामाजिक और सांस्कृतिक ज्यादा और राजनीतिक कम हैं।[3]

पंडित दीन दयाल उपाध्याय का राजनीति में प्रवेश

दीन दयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितंबर 1916 को उत्तर प्रदेश, मथुरा जिला के नगला चंद्रभान गांव में हुआ। बचपन से ही उनके जीवन में विपत्तियों का पहाड़ टुट पड़ा। ढ़ाई साल की ही उम्र में पिता का साया उनके जीवन से छंट गया। दीन दयाल उपाध्याय के पिता भगवती प्रसाद का देहांत हो गया। अभी दीन दयाल केवल सात वर्ष के ही हुए थे, कि माता का भी देहांत हो गया। दीन दयाल उस समय अपने नाना के घर में रह रहे थे। अभी माता को गुजरे हुए दो ही वर्ष हुए थे, कि नाना भी स्वर्ग सिधार गए। उनके जीवन पर मानो दुखों का पहाड़ टूट पड़ा हो, पर दीन दयाल अभी भी हिम्मत नहीं हारे थे और अपने छोटे भाई का भी पालन पोषण करते थे। जब दीन दयाल अपने अठारबें वर्ष में थे और नवीं कक्षा में पढ़ रहे थे, तो उनका छोटा भाई भी रोगग्रसत हो गया, दीन दयाल नें सब प्रकार से उपचार करवाया पर 18 नवंबर 1934 को शिव दयाल अपने बड़े भाई को अकेला छोड़ संसार से विदा हो गया। इस तरह से अपनों की मृत्यु ने दीन दयाल को झकझोर के रख दिया था, पर पंडित दीन दयाल ने अपने हौंसलों को कमजोर नहीं पड़ने दिया और विपरीत परिस्थितयों में भी वे पूरे उत्साह से आग बढ़ते रहे।

राष्टीय स्वयंसेवक संघ से संपर्क

दीन दयाल उपाध्याय अपनी स्नातक की पढ़ाई करने के लिए कानपुर गए, वहीं उनका संपर्क 1937 में अपने सहपाठी बालूजी महाशब्दे के माध्यम से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से हुआ। कानपुर में संघ संस्थापक डा हेडगेवार से भी उनकी भेंट हुई। कानपुर के इस विद्यार्थी जीवन से ही दीन दयाल उपाध्याय का सार्वजनिक जीवन प्रारंभ हो जाता है। सन 1937 के बाद 1941 तक छात्र रहे। सन 1939 में उन्होंने संघ का 40 दिन का प्रशिक्षण वर्ग प्रथभ वर्ष और सन 1942 मे द्वितीय वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त किया। अपनी पढ़ाई पूर्ण करने तथा द्वितीय वर्ष

का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद पं दीन दयाल उपाध्याय राष्टीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बन गए। वे आजीवन संघ के प्रचारक ही रहे। संघ के माध्यम से ही वे राजनीति में गए, भारतीय जन संघ के महामंत्री तथा अध्यक्ष रहे और एक संपूर्ण राजनीतिक विचार के प्रणेता बने।

राजनीतिक दल जनसंघ में प्रवेश

स्वतंत्रता के बाद भारत कई प्रकार की समस्याओं से भी घिरा हुआ था, देश किस दिशा में आगे बड़े और किस तरह से अग्रणी देशों की श्रेणी में अपने को ला कर खड़ा करे, यह बहस होना स्वाभाविक था। देश में कांग्रेस का एकतरफा जनाधार था और एक शक्तिशाली राजनीतिक दल के नाते भी भारत में कार्य कर रही थी। स्वतंत्रता के उदेश्य से ही कांग्रेस का निर्माण हुआ था और अपनी भुमिका भारत को आजाद करवाने के लिए बखूवी निभाई। अब भारत आजाद हो गया था और कांग्रेस एक मजबूत राजनीतिक दल बन कर कार्य कर रहा था, पर स्वतंत्र भारत मे किस विचार को लेकर आगे बढ़ना है और क्या लक्ष्य लेकर भारत की दिशा और दशा तय करनी है, इसकी कमी साफतौर पर झलक रहीं थी। पर कांग्रेस का कोई बेहतर और मजबूत विकल्प भी नहीं दिख रहा था। कांग्रेस में कुछ नेता ऐसे भी थी जो भारत की परिस्थितयों को भली भांति समझते थे और राष्ट्रहित में कार्य कर रहे थे और कुछ ऐसे भी थे, जो अपने निजि स्वार्थो को साथ ले कर चल रहे थे और राष्ट्र के विकास और प्रगति को दरकिनार कर अपना प्रभुत्व दिखा रहे थे। हम सरदार पटेल के प्रयासों और पर्यत्नों को नहीं भूला सकते, जिन्होंने अपनी बौद्धिक क्षमता तथा कुशल रणनिति का परिचय देते हुए विभिन्न स्वतंत्र रियासतों का भारत में विलय करवाया। डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी जो नेहरू सरकार में भारत के पहले उधोग मंत्री थे, परंतु जब नेहरू लियाकत समझौता हुआ, उसके वो पक्षधर नहीं थे और उन्होंने मंत्रीमंडल से इस्तीफा दे दिया। डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में ही 21 अक्तूबर 1951को अखिल भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शक्ति एवं डा मुखर्जी के नेतृत्व में अन्य हिंदू राष्ट्रवादी समुदायों को साथ लेकर भारतीय जनसंघ को विकसित करने की योजना बनी, लेकिन नियति इस योजना के अनूकूल नहीं थी। जनसंघ की स्थापना के 21 महीने के बाद ही कश्मीर आंदोलन के तहत श्रीनगर की जेल में 23 जून 1953 को डा मुखर्जी की मृत्यु हो गई।[4] राष्ट्रवादी भारतीय राजनीति जिसका प्रतिनिधित्व जनसंघ को करना था, के नेतृत्व का भार अब पूरी तौर पर संघ द्वारा राजनीति में भेजे कार्यकर्ताओं पर आ गया था। पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने प्रत्यक्षतः यह कार्य संभाला। सरसंघचालक मा स गोलवलकर इन नवीन राजनीतिक कार्यकर्ताओं के प्रेरणास्त्रोत व मार्गदर्शक थे।

दीन दयाल उपाध्याय के राजनीतिक विचार

पंडित दीन दयाल उपाध्याय केवल राजनीतिक उपदेशक नहीं थे। उनके जीवन से ही राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं को सीख लेनी चाहिए, उनका स्वयं का जीवन प्रेरणादायी अनुशासित तथा निष्कलंक था। राजनीति उनके लिए राष्ट्र की सेवा के लिए साधन थी, केवल सत्ता सुख के लिए नहीं थी। दीन दयाल उपाध्याय राजनीति में क्यों आए? इस प्रश्न का उत्तर है, उन्होंने राष्ट्रनीति के लिए राजनीति में पदार्पण किया। वे देश की सत्ता चाहते तो थे, किंतु किसके हाथों में ? उनका विचार था कि सत्ता उसके हाथों में जानी चाहिए, जो राजनीति का उपयोग राष्ट्रनीति के लिए कर सकें।[5]

भारत की अखंड़ता और एकता : भारत में जिस समय जनसंघ की स्थापना हुई, उस समस देश विपरीत परिस्थितयों से गुजर रहा था। कांग्रेस देश की परिस्थितयों को नहीं समझ पा रही थी और बिना किसी उदेश्य तथा लक्ष्य से देश में कार्य कर रही थी। कांग्रेस के नेताओं में दूरदर्शिता की कमी साफ झलक रही थी। जन संघ का उदेश्य साफ था और वह अखंड भारत की कल्पना कर कार्य करने वाला था। वह भारत को खंडित भारत करने के पक्ष में नहीं थे। जन संघ का सपष्ट मानना था कि भारत एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में दूनिया के सामने आएगा। दीन दयाल उपाध्याय के अनुसार अखंड भारत देश की भौगोलिक एकता का ही परिचायक नहीं है, अपितु जीवन के भारतीय दृष्टिकोण का द्योतक है, जो अनेकता में एकता का दर्शन करता है। अतः हमारे लिए अखंड भारत कोई राजनीतिक नारा नहीं है बल्कि यह तो हमारे संपूर्ण जीवनदर्शन का मूलाधार है।[6] स्वतंत्रता के बाद कश्मीर भारत के लिए एक अनसुलझी सी पहेली बन कर सामने आया है। धारा 370 के तहत कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा प्रदान किया गया है। कश्मीर के अलगाववादी नेता कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग न मानते हुए अपने राजनीतिक स्वार्थ को राष्ट्र के हित के आगे विशेष प्राथमिकता देते रहे हैं। कश्मीर भारत का अभिन्न अंग होते हुए भी भारत के लिए एक बहुत बड़ी समस्या बना हुआ है। भारतीय जनसंघ की स्थापना के पश्चात ही कश्मीर को भारत में विलय करने के लिए आंदोलनरत है। कश्मीर आंदोलन के प्रसिद्ध तीन नारे थेः **एक देश में दो विधान नहीं चलेंगे, एक देश में दो निशान नहीं चलेंगे, एक देश में दो प्रधान नहीं चलेंगे।** दीन दयाल उपाध्याय भी अपने एक लेख में लिखते हैंः आज कश्मीर कसौटी बन गया है, भारत की पंथनिरपेक्ष राष्ट्रीयता की, नेशनल कांग्रेस के नेताओं की राष्ट्र निष्ठा की और संयुक्त राष्ट्र संघ की न्यायप्रियता की।[7] जिस कश्मीर के लिए भारतीय जनसंघ के प्रथम अध्यक्ष श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिए और वर्तमान भारतीय जनता पार्टी के प्रेरणास्त्रोत दीन दयाल

उपाध्याय अपने जीवन में कश्मीर के लिए आंदोलन लड़ते रहे, आज उसी भारतीय जनता पार्टी की सरकार केंद्र में है। वर्तमान समय में भारतीय जनता पार्टी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में कार्य कर रही है और धारा 370 को राष्ट्र की अखंडता में बाधा देखते हुए कश्मीर समस्या का समाधान 'कश्मीर' का पूरी तरह से भारत में विलय करके किया है। यह उसी चिंतन का परिणाम दिखता है, जिसके लिए जनसंघ के दोनो नेताओं ने अपने राजनीतिक जीवन में राष्ट्र की अखंडता और एकता के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर दिए।

राजनीतिक दलों की भूमिका तथा चुनावी मैदान : भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। एक स्वस्थ लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की भूमिका अहम हो जाती है। भारत में काफी राजनीतिक दल सक्रीय हैं, कुछ क्षेत्रीय दल तथा कुछ राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कर रहे है। सभी राजनीतिक दल अपने अपने विचार को लेकर तथा लक्ष्य लेकर कार्य कर रहे हैं। राष्ट्र के विकास तथा उन्नति को गति देने के लिए राजनीतिक दलों की भूमिका भी अहम हो जाती है। राजनीतिक दलों के बारे में दीन दयाल उपाध्याय अपनी राय रखते हैं और कहते हैं, कि एक श्रेष्ठ दल जो सत्ता पर अधिकार प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्तियों का झुंड न होकर, एक जीवमान संगठन हो, जिसका सत्ता प्राप्त करने के अतिरिक्त अपना अलग वैशिष्टय हो।[8] वर्तमान समय में हम देखते हैं कि अधिकतर राजनीतिक दल स्वार्थ और एक दूसरे राजनीतिक दलों को नीचा दिखाने की राजनीति ज्यादा कर रहे हैं, जो कि देश के विकास में भी बाधक है। चुनावी संग्राम में हम देखते हैं कि किस तरह से राजनीतिक दलों द्वारा जातिगत समीकरण बिठाए जाते हैं, बाहुवल और धनवल का प्रयोग किया जाता है, जो कि एक स्वस्थ लोकतंत्र का परिचायक नहीं है। जातिवादी राजनीति वर्तमान समय में भारतीय लोकतंत्र में घातक बिमारी है। उपाध्याय की आस्था है कि मतदाता की बुद्धिमता ही इसका इलाज है, ये सब ऐसे तथ्य हैं कि जो देश की राजनीति को गलत दिशा में ले जा रहे हैं। राजनीतिक दलों को जो देश की राजनीति में प्रमुख दल के रूप में विकसित होना चाहते हैं, इन खतरों से सचेत रह कर अपने सिद्धांत की हत्या नहीं करनी चाहिए। इसी भांति जनता का यह कर्तव्य है कि वह जागरूक रहकर बुद्धिमता के साथ अपने विवेक का परिचय दें, जिससे राजनीतिक दलों के गलत दृष्टिकोण को सुधारा जा सके।[9] भारतीय जनता पार्टी दीन दयाल उपाध्याय को अपना आदर्श तथा प्रेरणास्त्रोत मान कर कार्य कर तो रही है, पर कहीं न कहीं चुनावी संग्राम में जातिवादी समीकरण बिठाने के लिए जातिगत राजनीति का शिकार हो जाती है। उपाध्याय जितनी अधिक श्रद्धा भक्ति राष्ट्र के प्रति रखते थे, उतनी ही उनकी आस्था एवं श्रद्धा लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति थी। उन्होंने अपने संपूर्ण राजनीतिक जीवन में लोकतांत्रिक मूल्यों को गतिशीलता प्रदान की।

राष्ट्रीय संकट की घड़ी में, राष्ट्रहित सर्वोपरि : दीन दयाल उपाध्याय राष्ट्रहित में राजनीति करने वाले राजनीतिज्ञ थे। अपने भारतीय वीरों से, जिन्होंने भारत को स्वतंत्र करवाने के लिए अपने जीवन की आहूति स्वतंत्रता रूपी यज्ञ में हंसते हंसते डाल दी, उन्हीं से प्रेरणा लेकर ही दीन दयाल उपाध्याय राष्ट्रहित के लिए ही राजनीति में आए। उनका पूरा प्रयत्न जनसंघ को राष्ट्रनीति में कार्य करने वाला राजनीतिक दल बनाना था। इसका उदाहरण हम देख सकते हैं, जब चीन द्वारा भारत पर आक्रमण किया गया, उस समय भारतीय जनसंघ का उत्तर प्रदेश में किसान आंदोलन चला हुआ था। दीन दयाल उपाध्याय की राजनीति चाल सीधी थी, टेढ़ी नहीं। राष्ट्रीय संकट की घड़ी में भी सरकार को कठिनाई में डालकर अपने दल का स्वार्थ साधना उनकी राजनीति में नहीं बैठता था। इसलिए उन्होंने इस संकट की घड़ी में तुरंत अपने किसान आंदोलन को बिना किसी शर्त स्थगित कर दिया।[10]

दीन दयाल राजनीति में जनसंघ के स्वतंत्र व्यक्तित्व और अस्तित्व को इस प्रकार बनाये रखना चाहते थे, कि वह देश के नवनिर्माण का कार्य कर सके। उनके विचार से जनसंघ केवल सत्ता प्राप्ति के लिए स्थापित दल नहीं था बल्कि राजनीतिक क्षेत्र के साथ ही राष्ट्रजीवन में युगपरिवर्तन कराने के लिए निर्मित राजनीति दल था। दीन दयाल उपाध्याय आधुनिक भारतीय राजनीति में क्रांति लाने वाल पुरोधा थे। राष्ट्र की अखंडता पर उन्होंने विशेष बल दिया और साथ ही विभाजन के पश्चात पाकिस्तान में रहने वाले हिंदू अल्पसंख्यंकों पर हो रहे अत्याचारों तथा जबरनी धर्म परिवर्तन पर अपने विचार प्रस्तुत किए, उस समय की कांग्रेस सरकार से उनके हितों की रक्षा करने की वकालत की। वर्तमान समय में भाजपा सरकार के द्वारा नागरिकता संसोधन बिल को पास कर एक्ट बना दिया गया है, जिसके तहत अब इस्लामिक देश पकिस्तान, बंग्लादेश, अफगानिस्तान में रह रहे अल्पसंख्यको को एक विशेष प्रकिया के तहत भारत की नागरिकता प्रदान करने का प्रावधान किया गया है।

दीन दयाल उपाध्याय का विशेष बल ऐसे कार्यकर्ताओं की फौज तैयार करने पर था जो कि अनुशाशित हों। उन्होंने अपने जन संघ के सिद्धांतों से कभी भी समझौता नहीं किया। दीन दयाल उपाध्याय ऐसे राजनीतिक नेता थे, जो कि राष्ट्रीय संकट के समय सभी राजनीतिक दलों को एकता दिखाने के लिए अपील करते रहे। श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कहा था, कि अगर मुझे **दो दीन दयाल मिल जाएं, तो में भारतीय राजनीति का नख्सा ही बदल दूं।** यही से हम कह सकते हैं कि दीन दयाल उपाध्याय का चरित्र कितना मजबूत था। उनके इसी

गम्भीर प्रयत्न के परिणामस्वरूप राजनीतिक परिदृश्य में उनका स्थान बना है और सदा बना रहेगा। आधुनिक भारतीय राजनीतिक दर्शन को पंडित दीन दयाल उपाध्याय का विशिष्ट योगदान है।

संदर्भ सूची:

1 समर्थ भारत, सांस्कृतिक राष्टवाद का अर्थ (प्रो बाल आपटे)

2 एकात्म मानववाद, व्यक्ति और समाज

3 भारतीय राजनीति को पंडित दीन दयाल उपाध्याय का योगदान, अध्याय 3, पं दीनदयाल जी का राजनीतिक चिंतन (डा ईला त्रिपाठी, डा प्रयाग नारायण त्रिपाठी) राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

4 कश्मीर आंदोलन व मुखर्जी की मृत्यु के संदर्भ में निम्न पुस्तकें पठनीय हैं उमाप्रसाद मुखर्जी, ए मुखर्जी, 'श्यामाप्रसाद मुखर्जी हिज डेथ इन डिटेंसन,' ए केस फार इन्क्वारी, कलकता सेकेंड एडीसन 1953, कश्मीर समस्या और जम्मू सत्याग्रह, भारतीय जनसंघ प्रकाशन, दिल्ली

5 पंडित दीन दयाल उपाध्यायः विचार दर्शन, राजनीति राष्ट्र के लिए

6 दीन दयाल उपाध्याय, राष्ट्र चिंतन, (6) अखंड भारतः साध्य और साधन, राष्टधर्म पुस्तक प्रकाशन, लखनउ, पृः 33

7 पांच्चजन्य, कश्मीर अंक, (दीपावली, 2019) 28 अक्तूबर, 1962, पृ 167

8 दीन दयाल उपाध्याय,' मताधिकार कागज का टुकड़ा नहीं, लोकाज्ञा है', पाच्चजन्य, 21 जनवरी 1962 (चुनाव विशेषांक पृ 40)

9 दीन दयाल उपाध्याय, 'मताधिकार कागज का टुकड़ा नहीं, लोकाज्ञा है', पाच्चजन्य, 21 जनवरी 1962 (चुनाव विशेषांक, पृ 41)

10 पंडित दीन दयाल उपाध्याय, विचार दर्शन